{ खुद के लिए जीने वाले की ओर कोई ध्यान नहीं देता पर जब आप दूसरों के लिए जीना सीख लेते हैं तो वे आपके लिए जीते हैं - परमहंस योगानंद }

सम्पादकीय

उपराष्ट्रपति की आपत्ति

जगदीप धनखड़ की यह कठोर टिप्पणी और गर्माएगी

तमिलनाडु के राज्यपाल की ओर से विधानसभा से पारित विधेयकों को रोकने पर सुप्रीम कोर्ट के हाल के फैसले ने जो बहस शुरू की थी, उसे उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की यह कठोर टिप्पणी और गर्माएगी कि न्यायपालिका सुपर संसद बनने की कोशिश न करे।

चूंकि सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपालों को विधेयकों पर तीन माह में फैसला लेने का आदेश देते हुए यह भी कहा था कि यदि राज्यपाल किसी विधेयक को असंवैधानिक मानते हुए राष्ट्रपति के पास भेजें तो वह उनसे राय लें, इसलिए यह सवाल उठा कि क्या उसे ऐसा आदेश देने का अधिकार है? यह सवाल इसलिए और भी उठा, क्योंकि फैसला सुप्रीम कोर्ट की दो सदस्यीय पीठ ने दिया, न कि संवैधानिक पीठ ने।

इस सवाल के बीच ऐसे संकेत दिए गए कि सरकार इस फैसले की समीक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट जा सकती है। वह सुप्रीम कोर्ट जाए या नहीं, यह प्रश्न अपनी जगह खड़ा रहेगा कि क्या सुप्रीम कोर्ट राज्यपालों को विधेयकों पर फैसला लेने के लिए समयसीमा में बांधते हुए राष्ट्रपति को भी आदेश दे सकता है?

इस प्रश्न के बीच इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि यह आदर्श स्थिति नहीं कि राज्यपाल विधेयकों पर कोई फैसला लिए बिना उन्हें लंबे समय तक दबाए रखें। यह सामान्य बात नहीं कि तमिलनाडु के राज्यपाल करीब एक दर्जन विधेयकों को रोके हुए थे। इनमें से कुछ वर्षों पहले पारित किए गए थे। ऐसा नहीं होना चाहिए था।

राज्यपाल को गुण-दोष के आधार पर विधेयकों पर या तो खुद फैसला लेना चाहिए या फिर उन्हें राष्ट्रपति के पास भेजना चाहिए। विधेयक दबाकर बैठने का अर्थ है, राज्य सरकार के शासन करने के अधिकार और जनता के हितों की अनदेखी करना। सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर उपराष्ट्रपति की आपत्ति का अपना आधार हो सकता है, लेकिन यह भी तो ठीक नहीं कि राज्यपाल विधेयकों पर फैसला ही न लें।

महत्वपूर्ण और राज्यपाल सरीखे संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों से यही अपेक्षित होता है कि वे समय पर फैसला लें। जब ऐसा नहीं होता, तभी सुप्रीम कोर्ट को हस्तक्षेप करने का अवसर मिलता है, लेकिन यह भी नहीं होना चाहिए कि वह हस्तक्षेप के नाम पर अपने अधिकारों से बाहर जाता दिखे।

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपालों के साथ राष्ट्रपति को ही समयसीमा में नहीं बांधा, बल्कि तमिलनाडु के उन विधेयकों को मंजूरी भी दे दी, जिन्हें राज्यपाल ने रोक रखा था। ऐसा इसके पहले कभी नहीं हुआ। यह पहली बार नहीं, जब अधिकारों को लेकर न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका में तकरार हुई हो।

ऐसी तकरार तब तक होती रहेगी, जब तक ये तीनों अपना काम समय पर और सही तरह से नहीं करेंगी। दुर्भाग्य से कई बार तीनों ही ऐसा नहीं करतीं और इसके दुष्परिणाम भोगती है जनता।

वि शे ष

गरीबों की भाग्य विधाता बनी मुद्रा योजना रोजगार के सपने हो रहे साकार

मुद्रा योजना का और अधिक खासतौर से गांवों-कस्बों तक प्रचार-प्रसार की दरकार है क्योंकि इससे ग्रामीण उद्योगों को एक नई दिशा दी जा सकती है और ग्राम्य स्तर पर ही रोजगार सृजित किए जा सकते हैं। रोजगार सृजन की दूरदर्शी मुद्रा योजना न केवल क्रांतिकारी सिद्ध हो रही है बल्कि गांव-गरीब के जीवन स्तर को भी ऊपर उठा रही है।

■ अनिल बलूनी

जनहित, स्वरोजगार और आर्थिक उन्नति को ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई पीएम मुद्रा योजना को इसी माह 10 वर्ष पूरे हुए। पिछले दिनों जब मैं अपने लोकसभा क्षेत्र में था, तब रुद्रप्रयाग में जिलाधिकारी ने मुझे मुद्रा योजना की सफलता की कई ऐसी कहानियां सुनाईं कि किस तरह सुदूर पहाड़ में इस योजना से लोगों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आ रहे हैं, रोजगार सृजित हो रहे हैं और पलायन पर अंकुश लग रहा है।

सेमलता भरदार, जखोली के रहने वाले सोबत सिंह को रोजगार के लिए घर से बाहर रहना पड़ता था। उन्होंने पीएम मुद्रा योजना से लोन लेकर अचार उत्पाद का व्यवसाय शुरू किया और आज वे चार और लोगों को रोजगार दे रहे हैं। इसके साथ ही अच्छी आय भी अर्जित कर रहे हैं। इसी तरह मवाणा गांव, नगरासू निवासी इंदु देवी ने भी पीएम मुद्रा योजना के माध्यम से गृहिणी से उद्यमी बनने तक का सफर तय किया। मवाणा में उन्होंने फैब्रिकेशन वर्क की एक यूनिट लगाई, जिसमें वे अपने साथ कई और महिलाओं को रोजगार दे रही हैं। बिंदु नामक एक महिला, जो पहले रोज 50 झाड़ू बनाती थी, अब 500 झाड़ू बनाने वाली एक यूनिट चलाती है।

ऐसी ही न जाने कितनी कहानियां हैं, जो पीएम मुद्रा योजना की सफलता की बानगी पेश करती हैं। जब विषम परिस्थितियों वाले दुर्गम पहाड़ों में स्थिति बदल रही है तो यह समझा जा सकता है कि यह योजना कितनी परिवर्तनकारी है। यही इस योजना का उद्देश्य है। प्रधानमंत्री इस योजना के जरिये आम लोगों को सशक्त बनाना चाहते हैं, ताकि वे किसी की मदद पर आश्रित न रहें। जब आप धरातल पर जाते हैं तो पीएम मुद्रा योजना के कारण आए बदलाव की बयार साफ दिखती है।

मैंने किशोरावस्था के दौर में देखा है कि लोग किस तरह समय पर इलाज, खेती या किसी काम के लिए धन जुटाने के लिए कितना परेशान रहते थे, क्योंकि बैंकों के दरवाजे तो गरीबों के लिए बंद ही रहा करते थे। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए गरीबों को उन लोगों पर निर्भर होना पड़ता था, जो मोटे ब्याज पर पैसे उधार देते थे और फिर वे उस जाल में फंसते जाते थे। जब बैंकों से लोन मिलना शुरू हुआ, तब भी लोन लेने के लिए पापड़ बेलने पड़ते थे, गारंटर की तलाश करनी पड़ती थी। दलाल जब लोन दिलाते थे तो मोटा कमीशन भी खा जाते थे। अब यह गुजरे जमाने की बात हो गई है।

मुद्रा योजना में किसी की गारंटी की जरूरत नहीं है। इसके तहत 50 हजार से 20 लाख रुपये तक का लोन लिया जा सकता है और वह भी गारंटी फ्री। इस योजना का असर यह हुआ कि अब हमारा देश जाब-सीकर नहीं, जाब-क्रिएटर तैयार कर रहा है। बीते 10 साल में 53 करोड़ से ज्यादा लोन पास हुए, जिसके तहत लगभग 33 लाख करोड़ रुपये का लोन दिया गया। इसमें लगभग 68 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं और 50 प्रतिशत अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं।

इस योजना का लाभ फल-फूल, सब्जी बेचने, चाय की दुकान चलाने वाले से लेकर बुनकर और लघु उद्योग चलाने वाले तक उठा रहे हैं। वे अपने सपनों को पूरा कर रहे हैं और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा कर रहे हैं। जो इस योजना का मजाक उड़ाया करते थे, वे भी आज दबी जुबान में ही सही, इसे रोजगार सृजन का एक अभिनव प्रयोग मानते हैं। पीएम मुद्रा योजना की वजह से धरातल पर जो सकारात्मक बदलाव आया है, उसे आंकड़ों में मापना मुश्किल है। देश के कोने-कोने में चाहे वह गांव हो या शहर, मुद्रा योजना का फायदा उठाकर लोगों को तरक्की करते देखा जा सकता है। मुद्रा योजना महिला सशक्तीकरण का भी एक प्रमुख माध्यम बनी है। महिलाएं अब उद्यमी बनने का सपना जी रही हैं। मुद्रा योजना को मातृशक्ति ने हाथोंहाथ लिया है। इससे एक तो महिलाओं में कुछ करने का जज्बा बढ़ा और दूसरे, वे आर्थिक गतिविधियों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने में सक्षम हुईं। मुद्रा लोन में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने वाले राज्यों ने उनके नेतृत्व वाले एमएसएमई के माध्यम से काफी रोजगार सृजन हुए। मुद्रा योजना से उन्होंने अपना व्यवसाय बढ़ाया है और अन्य महिलाओं को रोजगार दिया है। यह एक बड़ा बदलाव है। मुद्रा योजना से छोटे शहरों और गांवों तक कारोबार बढ़ा है। 'आउटकम्स आफ मोदीनामिक्स 2014-24?' नामक रिपोर्ट के अनुसार 2014 से हर साल कम से कम 5.14 करोड़ नए रोजगार शुरू हुए, जिसमें अकेले मुद्रा योजना ने 2014 से प्रति वर्ष औसतन 2.52 करोड़ स्थायी रोजगार जोड़े।

जम्मू-कश्मीर, जो आतंकवाद और अलगाववाद से पीड़ित रहता था और जहां युवाओं को आतंकी आका गुमराह किया करते थे, वहां भी 20 लाख से अधिक मुद्रा लोन दिए गए हैं। इससे वहां के युवा भी अलगाववाद को नकारकर मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। इस योजना से सीमांत गांव भी आबाद हो रहे हैं और पलायन भी घटा है।

मुद्रा योजना का और अधिक खासतौर से गांवों-कस्बों तक प्रचार-प्रसार की दरकार है, क्योंकि इससे ग्रामीण उद्योगों को एक नई दिशा दी जा सकती है और ग्राम्य स्तर पर ही रोजगार सृजित किए जा सकते हैं। रोजगार सृजन की दूरदर्शी मुद्रा योजना न केवल क्रांतिकारी सिद्ध हो रही है, बल्कि गांव-गरीब के जीवन स्तर को भी ऊपर उठा रही है।

(लेखक लोकसभा सदस्य एवं भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रमुख हैं)

देश/प्रदेश

सॉर्ट माय कॉलेज यूथ समिट-2.0 की शुरूआत

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने 'इंडियाज लीडिंग यूथ फेस्ट' का किया उद्घाटन

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। *शहर ने युवाओं की ऊर्जा, प्रेरणा और नवाचार का एक जबरदस्त संगम देखा, तीन दिवसीय सॉर्ट माय कॉलेज यूथ समिट-2.0 का राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में भव्य आगाज़ हुआ। राजस्थान के उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने इस समिट के पहले दिन भारत के सबसे प्रभावशाली युवा महोत्सवों में से एक बनने की दिशा में एक शानदार शुरुआत दी। सॉर्ट माय कॉलेज के फाउंडर दक्ष काला और मीराकी के फाउंडर लक्ष्य लश्करी के सहयोग से आयोजित इस आयोजन की शुरुआत एक लाइव बैंड परफॉर्मेंस के साथ हुई, जिसने पूरे ऑडिटोरियम को जोश और उत्साह से भर दिया। जयपुर के प्रमुख शिक्षण संस्थानों से आए 2000 से अधिक छात्रों की मौजूदगी ने समिट को ज्ञान, जिज्ञासा और युवा जोश से सराबोर कर दिया। दिन के सबसे प्रतीक्षित सैशन में से एक था बोट के*

को-फाउंडर अमन गुप्ता का की-नोट सैशन। समिट में अपने विचार व्यक्त करते हुए अमन गुप्ता ने अपनी स्टार्टअप यात्रा से लेकर भारत के सबसे प्रतिष्ठित लाइफस्टाइल ब्रांड में से एक बनाने तक की कहानी साझा की, जिसने वहाँ मौजूद युवाओं और उद्यमियों को गहराई से प्रेरित किया। दिनभर चले समिट में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों द्वारा इंपोर्टेंट सेशंस का संचालन किया गया। एमिटी यूनिवर्सिटी जयपुर ने कॉलेज के दौरान बिज़नेस शुरू करने पर अंतर्दृष्टियां साझा करते हुए सीखने की श्रृंखला की शुरुआत की। इसके बाद साउथ हैम्पटन यूनिवर्सिटी, दिल्ली ने अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के अवसरों पर प्रकाश डाला, वहीं विवेकानंदा ग्लोबल यूनिवर्सिटी ने बहुविषयक शिक्षा और उद्यमिता पर विचार प्रस्तुत किए। स्टैंड-अप कॉमेडियन आशीष सोलंकी ने अपने मज़ेदार और शानदार प्रदर्शन से छात्रों को हंसी से लोटपोट कर दिया। इसके बाद भारत के लोकप्रिय डिजिटल क्रिएटर्स-सोनल देवराज, प्रियांशु मोदी, तनिषा मिरवानी और देव रेयानी ने मंच संभाला और अपनी असली ज़िंदगी के अनुभवों और कंटेंट क्रिएशन की यात्रा को साझा किया, जिससे भारत की जनरेशन जी को बहुत कुछ सीखने को मिला।

गौतस्करी रोकने के लिए कड़े कदम उठाएं सरकार, कलक्टर-एसपी की तय हो जवाबदेही

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। राजस्थान में गौ तस्करी को गौसेवी संगठनों ने आक्रोश जताया है। बांसवाड़ा से सटे मध्यप्रदेश बॉर्डर पर 52 ट्रकों में ठूंस-ठूंस कर भरी गई गायों की पुलिस की मदद से हो रही तस्करी का खुलासा होने पर भारतीय गौ कांति मंच शाखा राजस्थान प्रदेश ने गंभीर सवाल उठाए हैं। मंच के वैशालीनगर स्थित कार्यालय में आपात बैठक कर तस्करी प्रकरण आक्रोश प्रकट करते हुए सरकार से ठोस कदम उठाने की मांग की गई। ऐसा नहीं होने पर सभी गौसेवी संगठनों को साथ लेकर राजधानी में धरना-प्रदर्शन की चेतावनी भी दी गई। मंच के प्रदेश अध्यक्ष ताराचंद कोठारी ने गुरुवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जानकारी में आया है कि ये गायें बलदेव मेला, मेड़ता सिटी (नागौर) से फर्जी दस्तावेजों के जरिए मंडला और खरगोन (मध्यप्रदेश) के किसानों के नाम पर खरीदी गई थीं और इन्हें महाराष्ट्र के बूचडख़ानों में भेजा जा रहा था। यह भी सुनने में आया कि तस्करों के पास देसी कट्टे, धारदार हथियार और मिर्ची पाउडर भी बरामद हुए हैं। अगर यह सभी तथ्य सही है तो बहुत गंभीर मामला है। राज्य सरकार को इसकी जांच करवानी चाहिए। ऐसी खबरों से गौसेवी संगठनों में भारी आक्रोश है।

लिवर में खराबी होने से लिवर कैंसर, सिरोसिस और हेपेटाइटिस की समस्या : डॉ. सक्सेना

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

अगर आपके मुंह से नियमित रूप से बदबू आती है तो यह लीवर रोग के लक्षण हो सकते हैं। लोगों में यह भ्रांति है कि शराब के अधिक सेवन से ही लीवर खराब होता है, लेकिन शराब के साथ साथ अनियमित दिनचर्या और खानपान में लापरवाही, खाने में तेल और मसालों का अधिक प्रयोग एंव फास्ट फूड का अत्यधिक सेवन लीवर को कमजोर बना सकता है।

मणिपाल हॉस्पिटल के पेट, आंत एवं लिवर रोग विशेषज्ञ डॉ. कन्दर्प सक्सेना ने बताया कि आमतौर पर लीवर की बीमारी के अधिकतर मरीज गर्मियों में आते रहे हैं पर अब लोगों की दिनचर्या में आए बदलाव के कारण सर्दियों में भी इस बीमारी के काफी मरीज आने लगे हैं। लीवर की खराबी को अनदेखा करना स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। लीवर में खराबी होने से लीवर कैंसर, लीवर सिरोसिस, हेपेटाइटिस (इसमें ए, बी, सी, डी व ई शामिल हैं) पीलिया की समस्याएं होती हैं, इन सब से बचने के लिए जरुरी है कि सही समय पर लीवर खराबी के लक्षणों को जानकर लीवर का इलाज कराया जाए।

सिरोसिस की बीमारी का मुख्य कारण शराब : शराब का सेवन लीवर की सिरोसिस बीमारी के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है, लेकिन ऐसा नहीं कि यह शराब नहीं पीने वालों को नहीं हो सकता है। शोध की मानें तो लीवर की बीमारी के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार शराब है। मधुमेह, मोटापा भी सिरोसिस जैरी बीमारियों का मुख्य कारण है।

उन्होंने बताया कि लीवर खराबी के स्किन का क्षतिग्रस्त होना, चेहरे पर ज्यादा थकान दिखाई देना, भूख कम लगना, वजन का कम होना, त्वचा पर सफेद धब्बे पड़ना, यूरिन का रंग गहरा पीला होना, नाखून पीले दिखना मतलब लीवर का संक्रमण, पेट का फूल जाना या टाइट रहना आदि हो सकते हैं।

'लिवर की बीमारियों के लिए पहले से सचेत रहना आवश्यक'

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर

लिवर शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, जो हमारे शरीर में पांच सौ से भी अधिक कार्य करता है। स्वस्थ लिवर के बिना जीवन असंभव है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार लिवर की बीमारियां भारत में मृत्यु का दसवां सबसे आम कारण है।

जागरुकता के उद्देश्य से नारायणा हॉस्पिटल, जयपुर में स्वस्थ लिवर के महत्व को समझाने के लिए विश्व लिवर दिवस मनाया गया। नारायणा हॉस्पिटल का प्रयास रहता है कि लोगों को इलाज के साथ-साथ बचाव को लेकर भी जागरुक किया जाए। वहीं लिवर के महत्व की यदि बात की जाए तो यह हमारे शरीर में रक्त से विषाक्त पदार्थों को फ़िल्टर करने और पाचन में सहायता करने के लिए महत्वपूर्ण है। परंतु आजकल स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही, अनुचित खानपान व अन्य कारणों के चलते हेपेटाइटिस, सिरोसिस और लिवर कैंसर जैसी बीमारियां बढ़ रही हैं, जो दुनिया भर में लोगों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही हैं।

शीघ्र जांच ही आपके लिवर को स्वस्थ रखने की कुंजी : नारायणा हॉस्पिटल के सीनियर कंसल्टेंट-गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, डॉ. अमित सांघी ने कहा कि लिवर की बीमारियों को 'साइलेंट किलर' के रूप में जाना जाता है क्योंकि शुरुआती चरण में इनके कोई स्पष्ट लक्षण नहीं दिखाई देते। लिवर की समस्याओं के कुछ आम संकेतों में थकान, भूख न लगना, बेचैनी, पेट में दर्द या सूजन, गहरे रंग का पेशाब और त्वचा व आंखों का पीला पड़ना (पीलिया) शामिल हैं, इन लक्षणों पर समय रहते ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने बताया कि लिवर डॅमेज के मुख्य कारणों में हेपेटाइटिस वायरस (हेप ए, बी, ई, सी), अत्यधिक शराब सेवन, कुछ दवाएं (जिनमें वैकल्पिक चिकित्सा शामिल है) और फैटी लिवर हैं।

राज्यस्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

मॉर्निंग न्यूज @ जयपुर। आयुक्तालय कॉलेज शिक्षा जयपुर द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का राज्यस्तरीय पुरस्कार समारोह हरिश्चंद्र लोक प्रशासन संस्थान के बीएस मेहता सभागार में आयोजित किया गया। एसएस जैन सुबोध गर्ल्स पीजी कॉलेज सांगानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना के राज्यस्तरीय संस्थागत पुरस्कार के लिए प्राचार्या डॉ. रीटा जैन को सर्वश्रेष्ठ संस्था पुरस्कार, सहायक आचार्य एवं कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मंजू आचार्य को सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम अधिकारी पुरस्कार तथा स्वयंसेविका हर्षिता शर्मा (एमकॉम ईएएफएम) तथा स्वयं सेविका लक्षिता शर्मा (बीए) सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आयुक्तालय, कॉलेज शिक्षा राजस्थान के निर्देशन में आयोजित राज्यस्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह में डॉ. ओम प्रकाश बैरवा आयुक्त कॉलेज शिक्षा, क्षेत्रीय निदेशक एसपी भटनागर, राज्य समन्वयक/राज्य संपर्क अधिकारी डॉ. कृष्ण कुमार कुमावत, प्राचार्य डॉ. स्निग्धा शर्मा, जिला समन्वयक डॉ. गोविंद शरण शर्मा उपस्थित रहे।